संघ कार्यकर्ता

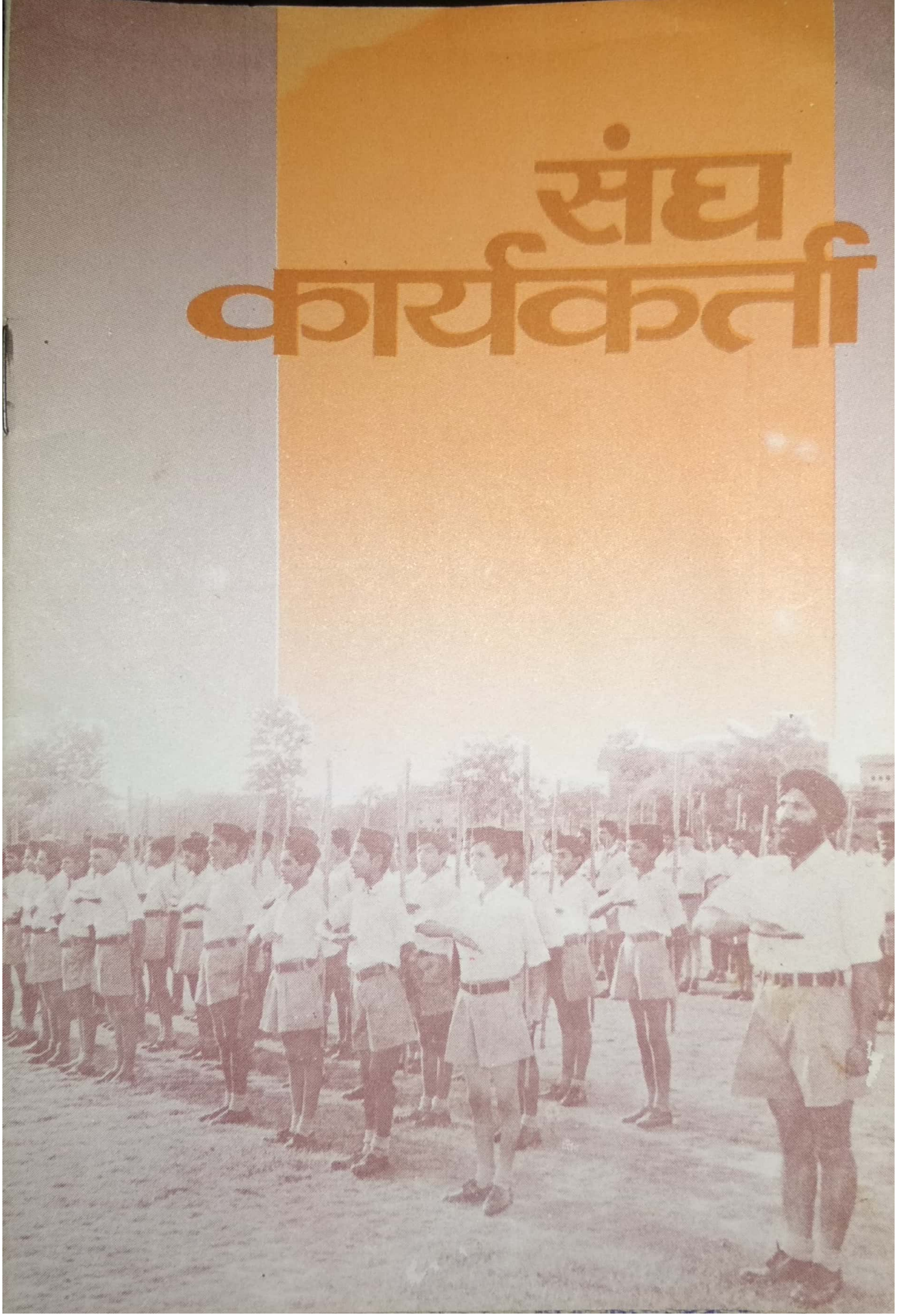

Scanned by CamScanner

संघ कार्यकर्ता

मा. सुरेशजी केतकर

भारतीय विचार साधना, नागपुर

Scanned by CamScanner

प्रकाशक
प्र. ग. वैद्य
कार्यवाह, भारतीय विचार साधना
डॉ. हेडगेवार भवन, महल, नागपुर - ४४० ००२

पाचवाँ संस्करण
फरवरी २००३

मूल्य
रु. ८.००

मुद्रक
सूरज प्रिंटर्स
गरोबा मैदान, नागपुर-८.

Scanned by CamScanner

श्रीराम

प्रस्तावना

अपने एक अभ्यास वर्ग में समारोप के रूप में अपने एक श्रेष्ठ कार्यकर्ता श्री. सुरेशराव केतकर ने कार्यकर्ताओं को किया हुआ मार्गदर्शन संकलित रूप में सबके सामने लाने का अपने कार्यकर्ताओंने प्रयास किया है। उसके लिये एक औपचारिक प्रस्तावना के रूपमें कुछ लिखने का यत्न कर रहा हूं।

वास्तव में श्री सुरेशराव जैसे कर्मठ, अनुभवी, अखिल भारतीय अधिकारी व्यक्ति द्वारा किया हुआ विश्लेषण यह वैसे ही पूर्ण है। उसमें मेरे जैसे किसीने कुछ शब्द जोडना अनधिकृत चेष्टा है।

उन्होने कार्यकर्ता को कार्य की चेतना शक्ति कहा है। कितना समर्पक विशेषण है ! हम सोचें - चेतना याने चैतन्य-कार्य के उस प्रकार के स्वरूप का निर्माता। चैतन्य निर्माण कर सकनेवाला स्वयं चैतन्यपूर्ण होना चाहिये। अति परिश्रमी सबसे कार्य करवा सकनेवाला। यह चेतनाशक्ति आने के लिये उन्होने बताया कि चिन्तन आवश्यक है।

चिन्तन में अपनी दृष्टि से शाखा ही प्रमुख है। किसकी शाखा ? जहां हिन्दु वहां शाखा। समाज के सभी घटकों का सहभाग और सबको आकर्षित कर सके ऐसे कार्यक्रम। दिमाग में यही बातें चलनी चाहिये। परन्तु यह चिंतन अकेले में करते हैं क्या ? नहीं, यहां सामूहिक चिन्तन होता है - सबको लगना चाहिये शाखा अपनी है, बढनी चाहिये। हम केवल नाममात्र के कार्यकर्ता नहीं । कार्य करनेवाले और कार्य को बढानेवाले हैं और सभी ऐसे बनें, यह प्रयास। इसके लिये साथ साथ घूमना, मिलना, बैठना, खान-पान करना जिससे सब एकरस हो जाये।

इसी में गट व्यवस्था, गट नायकोंका दायित्व इसका विचार - किन्तु यह दायित्व समझाने में केवल शब्दों का उपयोग नहीं होता। उसे स्वयं करके बताना पडता है। यह साथ साथ मिलने से होता है। और इसी में से विषय स्पष्ट होते जाते हैं। दायित्व बोध होता है। बौद्धिक चर्चा से नहीं। क्योंकि चर्चा तो रुखी होती है। अपने संघकार्य में रुक्षता या रुखापन नहीं, स्नेह काम करता है।

अपने पू. डॉक्टर साहब सदैव बताते थे कि स्नेहपूर्ण सहयोग, सहकार्य होना चाहिये - अंग्रेजी शब्द वे उपयोग में लाते थे Lubricant Co-operation - और उदाहरण देते थे साइकिलका। सभी साइकिलें चलती ही हैं - अनेक आवाज आते

Scanned by CamScanner

हैं - किन्तु जिसमें ठीक तेल दिया हो वह आवाज न करती हुई चलती है। अपना व्यवहार ऐसा हो।

साइकिल में तो तेल देंगे परन्तु अपने कार्य में यह 'स्नेह' परस्पर के प्रेममय, आत्मीयता के संबंधोंसे ही निर्माण होगा। कार्यकर्ता अन्तर्बाह्य स्नेहपूर्ण होना चाहिये। तभी वह कम शक्ति खर्च कर अधिक काम कर सकता है। यह स्नेह, कार्यकर्ता अपने व्यवहार से शाखा द्वारा निर्माण करता है। केवल संघस्थान ही नहीं, सभी जगह व्यवहार स्नेहपूर्ण हो, सभी से अपनत्वका भाव हो।

कार्यकर्ता यदि कार्य की चेतना शक्ति है तो हमें चिन्तन से ध्यान में आयेगा कि यह स्नेहपूर्ण व्यवहार, सबको अपना आत्मीय मानकर चलने का गुण, यह उसकी अपनी चेतना शक्ति है।

हम विचार करें, यह अपनी 'चेतना शक्ति' हमने जागृत रखी है क्या ? आज जितने परिश्रम हम कर रहे हैं उतने ही परिश्रम में आज तिगुना चौगुना कार्य हम कर सकते हैं। यह आजकी आवश्यकता है।

आज की आवश्यकता कहते समय मन में विचार आता है कि आज अपने कार्यकर्ता जीवन के अनेक क्षेत्रों में कार्य करते हैं। कुछ रुचि के कारण, कुछ क्षेत्र की आवश्यकता के कारण। परन्तु सबकी मूल प्रेरणा संघकार्य होने से इन सबके परस्पर संबंध भी वैसेही आत्मीयता पूर्ण होने चाहिये। सबको अन्तःकरण की भावना के कारण यही लगना चाहिये कि हम सब एक हैं और समाज की एकता के लिये भिन्न-भिन्न क्षेत्र में काम कर रहे हैं। हम संघ कार्य में रहते हुए यदि यह भावना तीव्र नहीं हुई तो क्षेत्र बदलनेपर वह कैसी रहेगी ? इसका विचार भी हमें करना चाहिये, क्योंकि राष्ट्र के सभी कार्य, समाज के सभी कार्य उत्तम चलें यह अपने ही कायकर्ता का दायित्व है।

इस दायित्व में और एक विशेषता है कि इस दायित्व को पूरा करना है किन्तु वह हम पूरा कर रहे हैं यह भाव मन में नहीं रहेगा। वह कार्य उस क्षेत्र के ही प्रमुख करते हैं, हम केवल Catalytic agent है। इतनी कार्यकुशलता फिर भी अलिप्तता - यह अपने अन्तःकरण की विशालता और सबको अपना मानने की भावना के बिना हो नहीं सकती। इसका अभ्यास हरेक कार्यकर्ता करें, आत्मनिरीक्षण करें, इस रास्ते पर मैं ठीक चल रहा हूं या नहीं उसका विचार करें और अपने को रुक्षता (रुखेपन) से बचाकर एक स्नेहपूर्ण आकर्षक कार्यकर्ता के नाते तैयार करें, यही प्रार्थना है।

डॉ. वा. के. उपाख्य आबाजी थत्ते
(अ. भा. प्रचार प्रमुख - रा. स्व. संघ)

Scanned by CamScanner

॥ श्री ॥

संघ कार्यकर्ता

इस कार्यक्रम के लिये वर्ग - ऐसा शब्द प्रयोग किया गया है। कभी कभी 'वर्ग' के पहले एक और शब्द रखा जाता है - और वह शब्द है, अभ्यास-वर्ग। अभ्यास-वर्ग और प्रदर्शन में एक मौलिक अंतर रहता है। अभ्यास-वर्ग में एकत्रित लोग अपने कार्य के बारे में स्वयं जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं तो प्रदर्शन में अपने कार्य का स्वरूप दूसरों को दिखाने का प्रयास होता है। मैं ऐसा मानता हूं कि कल से अभी तक हम सभी कार्यकर्ता यहां अभ्यास-वर्ग के नाते एकत्रित थे और अपने कार्य सम्बन्धी विविध विषयों पर हम लोगों ने चर्चा की है। इस वर्ग की अन्तिम कड़ी जोड़ने के लिये मुझे कहा गया है, इसलिये मैं आपके सम्मुख खड़ा हूं।

डाक्टरजी : कुशल संगठक

कोई अगर आपसे प्रश्न पूछे कि अपने देश के प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार कौन थे ? तो इस प्रश्न के उत्तर में आप मुन्शी प्रेमचन्द का नाम बतायेंगे। भारत के उत्कृष्ट कवि का नाम पूछा गया तो आपका उत्तर होगा - रवीन्द्रनाथ ठाकुर । कभी यह प्रश्न पूछा जाये कि भारत का आकर्षक व्यक्तित्व, अंग्रेजी में जिसे 'हॅण्डसम पर्सनालिटी' कहा जाता है, कौन था ? तो उत्तर दिया जायेगा - सुभाषचन्द्र बोस। लेकिन ऐसे किसी भी प्रश्न का उत्तर डॉ. हेडगेवार नहीं है। फिर डाक्टरजी की विशेषता क्या थी - यह प्रश्न किसीने पूछा तो इसका उत्तर एक ही है - कुशल समाज संघटक याने डाक्टर हेडगेवार। समाज संघटक - शब्द द्वि-आयामी है। एक आयाम है, समाज में परिवर्तन और दूसरा आयाम है, इस पद्धति से जो भाग जागृत हुआ है, उनका संघटन। जब समाज संघटन कहा जाता है तो संघटन के हरेक मनुष्य में एक विशेष प्रकार की भावजागृति हुई है और ऐसे भाव-जागृत लोक एकत्रित आये हैं - इस कल्पना से एक कुशल समाज संगठक यह शब्द प्रयोग हम डॉक्टरजी के बारे में कर सकते हैं।

Scanned by CamScanner

लेकिन डॉक्टरजी की एक और विशेषता है। उदात्त विचार और उसे साकार करनेवाली अत्यंत दुर्गम पद्धति - ऐसा विचार रखनेवाले बहुत लोग हो सकते हैं। विविध प्रकार की बीमारियों पर औषधियों की जानकारी देनेवाली एक पुस्तक का नाम है 'चिकित्सा प्रभाकर'। मैंने जब उसे पढ़ने का प्रयास किया तो ध्यान में आया कि उसमें जो दवाईयां बतायीं गयीं है, वह निर्माण करना आसान नहीं है, हर किसी के लिये संभव भी नहीं है। मैंने वह पुस्तक मनोरंजन के लिये पढी। 'चिकित्सा प्रभाकर' में हरेक प्रकार की बीमारी के लिये दवाई लिखी है किन्तु दवाई निर्माण करना अत्यंत कठिन साध्य है। डॉक्टरजी की विशेषता यह रही कि एक उदात्त-विचार, लेकिन निर्माण करने के लिये उतनी ही सरल पद्धति भी उन्होने दी - यह डाक्टर साहब की देन है। इस पद्धति का उल्लेख हम शाखा, इस नाम से करते हैं।

शाखा पद्धति : ५ विशेषताएं

हमारी यह जो शाखा पद्धति है, उसकी कुल पांच विशेषताएं हैं - पहली विशेषता है, दैनिक। दूसरी - एक घंटे का कार्यक्रम। तीसरी विशेषता है - सर्व दूर। चौथी विशेषता है - सभी के लिये और पांचवी विशेषता हैं - सामान्य कार्यक्रम। शाखा नाम का अपना जो कार्यक्रम है, वह साल भर में कभी एक-दो बार करेंगे - मानों किसी त्योहार की तरह कभी-कभी शाखा लगायेंगे - ऐसा नहीं है। शाखा यह प्रतिदिन लगनी चाहिये। शाखा का कार्यक्रम १ घंटे के लिये निर्धारित है - बाकी २३ घंटे का समय अपने निजी काम के लिये, शाखा में उपस्थित रहनेवाला स्वयंसेवक उपयोग में ला सकता है।

जहां हिन्दू वहां शाखा

शाखा कहां हो सकती है ? पवित्र गंगा नदी है और जब गंगा स्नान करने की इच्छा हो जाती है तो अपने समाज का मनुष्य - ऋषिकेश जायेगा, हरिद्वार जायेगा, प्रयाग जायेगा अथवा वाराणसी में जायेगा। पटना नगरी में भी गंगा नदी है, लेकिन यह कभी सुनने में नहीं आया कि कोई गंगा स्नान के लिये मैं पटना जा रहा हूं, ऐसा कहे। हां, पटना के लोग जरूर गंगा स्नान के लिये

Scanned by CamScanner

नदी पर जाते हैं। लेकिन तीर्थक्षेत्र जिसे कहा जाता है, ऐसे तीर्थक्षेत्र निश्चित हो जाते हैं। तो इसी प्रकार समाज में उचित परिवर्तन और ऐसे समाज का संगठन करने का तीर्थक्षेत्र नागपुर है और केवल नागपुर में ही यह परिवर्तन हो सकता है, ऐसी हमारी कल्पना नहीं है। हम नागपुर में घूमने के लिये निकलते हैं तो बजाज की एक ऑटोरिक्शा देखने को मिलती है। यदि आप जम्मू गये तो वहां पर भी बजाज की ही ऑटोरिक्शा है। मद्रास, बंगलौर, त्रिवेंद्रम, कलकत्ता, पोरबंदर, अहमदाबाद - देश में कहीं भी जाओ - बजाज की ही ऑटोरिक्शा है। लेकिन बजाज की ऑटोरिक्शा केवल एक या दो स्थानों पर बनती है। वर्तमान में पुणे में और औरंगाबाद में। इन दो स्थानों पर ही उनकी फॅक्टरी है। संघ की शाखा यह एक कार्यक्रम एक विशिष्ट तीर्थक्षेत्र में ही हो सकता है अथवा ऐसा मनुष्य निर्माण करने की फॅक्टरी मर्यादित स्थानों पर ही है - ऐसी बात नहीं है। आज देशभर में २५ हजार स्थानों पर संघ की शाखाएं हैं और हमारा प्रयत्न रहेगा कि जहां हिन्दू समाज है, वहां संघ की शाखा हो । इसीलिये मैंने शब्द प्रयोग किया - सर्वदूर। कहीं पर भी जाओ वहां संघ की शाखा हो सकती है।

सभी का सहभाग

हम जानते है कि भारत की सेना है। सेना किसलिये ? तो देश का संरक्षण करने के लिये उसकी आवश्यकता है। समाचार पत्रों में विज्ञापन आता है कि सेना में भर्ती हो जाओ। मैं संघ का अ.भा. शारीरिक शिक्षण प्रमुख हूं, तो स्वाभाविक रूप से मेरा यह कर्तव्य है कि देश की सुरक्षा के लिये खड़े हो जाना, इसलिये मैंने भी सेना में भर्ती होने का निर्णय लिया तो क्या सेना में मेरी भर्ती संभव है ? मेरी आयु ५५ वर्ष की है और विज्ञापन में आयु मर्यादा १६॥ से १८॥ वर्ष लिखी है - अतः मैं चाहूं तो भी अब मुझे सेना में प्रवेश नहीं मिल सकेगा। किन्तु जहां तक संघ शाखा का प्रश्न है, वहां केवल युवकों को अथवा जिनको अभी मूछें निकल रहीं हैं, ऐसे ही लोगों को प्रवेश मिलेगा, ऐसी बात नहीं है। यहां तो जिनके सिर के बाल उड़ गये हैं, ऐसे वृद्ध व्यक्ति और अभी अभी जिसने अपने दो पैरों पर चलना सीखा है, ऐसा शिशु भी संघ की शाखा में है। इसीलिये मैंने शाखा की चौथी विशेषता बताते हुए 'सभी

Scanned by CamScanner

का सहयोग' - यह शब्द प्रयोग किया था।

शाखा के कार्यक्रम

संघ की शाखा में हम कौन से कार्यक्रम करते हैं ? इन कार्यक्रमों का दर्शन किया तो ध्यान में आयेगा कि कुछ प्रौढ लोग बैठकर गीता का अध्याय पढ़ते हैं - बैठे बैठे कोई दो-चार आसन करते हैं, यदि शरीर साथ दे तो सूर्यनमस्कार भी करते हैं। जो जवान हैं, तरुण हैं वे तो नियुद्ध करते हैं और मस्ती में खेल-कूद के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। ये सभी कार्यक्रम सामान्य हैं किन्तु उनमें असामान्य परिवर्तन की क्षमता है। यह डॉक्टरजी की विशेषता है कि उन्होने अपने संगठन के लिये इस प्रकार की शाखा नामक आसान कार्यपद्धति भी सामने रखी।

हमारे कार्य की चेतनाशक्ति - कार्यकर्ता

कोई भी कल्पना हो, उसे साकार करने के लिये कोई न कोई पद्धति अपनानी पड़ती है। जरा विचार करें, यह कल्पना क्या है और पद्धति किसे कहते हैं। मेरी दृष्टि में कल्पना याने 'शब्द' और पद्धति याने 'कृति' है। किसी भी कार्य का कोई न कोई हेतु निश्चित रहता है और उस हेतु के लिये एक मार्ग निश्चित रहता है। यहां भी हेतु याने 'शब्द' और मार्ग याने 'कृति' समझना चाहिये। इसी प्रकार कार्य के लिये साध्य होता है और साध्य प्राप्त करने के लिये साधन होता है - यहां भी साध्य याने 'शब्द' और साधन याने 'कृति' ही है। संगठन के कार्य में चेतना शक्ति कौनसी है, इसका कभी हमने शोध किया तो यह ध्यान में आयेगा कि ऐसे कार्य में चेतना शक्ति एक मनुष्य होता है और ऐसे मनुष्य को संघ में 'स्वयंसेवक' कहा जाता है। कुछ विशिष्ट कारणों के लिये इस स्वयंसेवक के लिये एक और शब्द जुड़ जाता है, वह शब्द है 'कार्यकर्ता'। यह स्वयंसेवक कार्यकर्ता ही हमारे कार्य की चेतना शक्ति है । हम सभी कार्यकर्ता हैं। इसीलिये हमारे हरेक विषय का चिन्तन करते समय, अभ्यास वर्ग में भी, कार्यकर्ता के बारे में भी कुछ न कुछ विषय रखना आवश्यक है। आज मैं इस 'कार्यकर्ता' के बारे में ही अपने विचार रखना चाहूंगा।

Scanned by CamScanner

कार्यकर्ता के प्रकार

संघ में कार्यकर्ता के प्रमुख रूप से तीन प्रकार है। प्रथम प्रकार उन कार्यकर्ताओंका है, जिन्हे प्रचारक कहा जाता है, जो पूर्ण समय केवल संघ का ही कार्य करनेवाला होता है - वर्तमान में, ऐसे प्रचारकों की संख्या पूरे देशभर में २२०० है। इतने विशाल समाज में प्रचारकों की यह संख्या एक दृष्टि से अल्प ही कही जायेगी, इसलिये मैं उन्हे अलग ही रखता हूं। दूसरे प्रकार के कार्यकर्ता में उनका समावेश होता है, जिन्हे सामान्यतया शाखा-कार्यकर्ता कहा जाता है। इनमें एक कार्यवाह होता है, दूसरा मुख्य शिक्षक और उसकी सहायता करनेवाले - गण-शिक्षक, गण अग्रेसर, गटनायक, उप गटनायक आदि होते हैं। किन्तु कार्यवाह और मुख्य शिक्षक शब्द में, शाखा में कार्य करनेवाले ऐसे अन्य सभी कार्यकर्ताओं का अन्तर्भाव है। कार्यकर्ता का तीसरा प्रकार है, जिनमें मंडल प्रमुख, नगर शारीरिक प्रमुख, बौद्धिक प्रमुख, प्रान्त कार्यवाह और प्रान्त के संघचालक आदि की गणना होती है, जिनके पास एक निश्चित उपशाखा की एक ईकाई नहीं रहती, बल्कि एक भौगोलिक क्षेत्र रहता है। इस तरह कार्यकर्ताओं का एक वर्ग प्रत्यक्ष शाखा चलानेवाला होता है और दूसरा कार्यकर्ताओं का वर्ग ऐसा होता है जो उसके भौगोलिक क्षेत्र में चलनेवाली विभिन्न शाखाओं को दिशा देनेवाला, उनका मार्गदर्शन करनेवाला, उन्हे सूचना देनेवाला होता है - इस वर्ग के कार्यकर्ताओं के लिये पूरे देश में, 'प्रवासी कार्यकर्ता' - यह शब्द प्रयोग किया जाता है।

संघ नौका के खेवनहार

प्रमुखतया इन दो प्रकार के कार्यकर्ताओं के कार्य का स्थूल स्वरूप भी निश्चित है। जो प्रत्यक्ष शाखा के कार्य से जुड़ा कार्यकर्ता है, वह अपने कार्य की गतिशीलता निश्चित करता है और जो प्रवासी कार्यकर्ता है वह अपने कार्य की दिशा निश्चित करता है। जैसे नदी में चलनेवाली नौका रहती है। उस नौका में, संचालन के दो साधन होते हैं। एक साधन को पतवार कहा जाता है (मराठी में इसे 'सुकाणु' कहा जाता है) - इसका

Scanned by CamScanner

उपयोग नौका की दिशा बदलने के लिये होता है। नौका को दांयी ओर बांयी ओर मोड़ना हो तो इस पतवार का सहारा लिया जाता है। पतवार की हलचल के कारण ही नौका निश्चित दिशा में बढ़ती है। लेकिन इसके साथ ही नौका में दो चार ऐसे चप्पू होते हैं, (जिसे मराठी में 'वल्हे' कहा जाता है) जिन्हे हिलाने से नौका आगे बढ़ती है। एक अच्छी नौका हम किसे कहेंगे ? जिस नौका में केवल पतवार है वह नौका दिशा तो पकड़ सकती है, लेकिन आगे नहीं बढ़ सकती - वह अपने स्थान पर ही दिशा बदलती रहेगी। अच्छी नौका वह भी नहीं, जिसमें चार-पांच चप्पू हैं और चप्पू चलानेवाले लोग हैं - ऐसी नौका आगे तो जायेगी लेकिन किस दिशा में जायेगी, कहां जायेगी, कहा नहीं जा सकता। एक अच्छी नौका बनानेवाला कारीगर उस नौका में चप्पू भी बनाता है, और पतवार भी बनाता है - चप्पू का नाम है, गतिशीलता और पतवार का काम है दिशा देना। संघ की नौका योग्य पद्धति से आगे ले जाने के लिये हमारे पास जहां गतिशीलता बनाये रखने वाले कार्यवाह, मुख्य शिक्षक नामक कार्यकर्ता हैं वहीं वर्तमानकाल के परिप्रेक्ष्य में कार्य को उचित दिशा देनेवाले प्रवासी-कार्यकर्ताओं का भी वर्ग है। इसमें से मैं किस वर्ग का कार्यकर्ता हूं, यह हममें से हरेक कार्यकर्ता को अपना उचित मूल्यमापन करना चाहिये।

घड़ी के दर्शक और कार्यकर्ता

यहां जो कार्यकर्ता बैठे हैं, उनमें कार्यवाह, मुख्य शिक्षक तथा मंडल, विभाग, नगर और प्रान्त स्तर के कार्यकर्ता भी हैं। मेरे जिम्मे जो काम है, उसे प्राथमिकता देकर काम करते हुए अपने संघ कार्य को निरंतर आगे बढाने के लिये स्थितियां निर्माण करना, यह हम सभी कार्यकर्ताओं का दायित्व है। आप सभी जानते हैं कि लोगों के हाथों में घड़ी रहती है - इस घड़ी में दर्शक होते हैं, जिन्हे कांटे कहा जाता है। इनमें एक दर्शक (कांटा) बहुत तेज गति से आगे सरकता नजर आता है - अपनी सामान्य आंखों से उसकी गति देखी जा सकती है। दूसरा दर्शक (कांटा) ऐसा होता है, जिसकी गति सरलता से देखने को नहीं मिलती, किन्तु १५-२० मिनट बाद वह काटा भी आगे खिसका हुआ

Scanned by CamScanner

स्पष्ट नजर आता है। घड़ी में लगा एक तीसरा दर्शक (कांटा) अत्यंत धीमी गति से आगे बढ़ता है - एक चक्कर काटने के लिये उसे पूरे बारह घंटे लगते हैं। हम यह भी देखते हैं कि हरेक घड़ी में तीन दर्शक होते हैं - उनके रंग भले ही अलग अलग हों, किन्तु सभी दर्शक एक ही, काम करते हैं। उनकी गति अलग अलग हैं, उनकी लम्बाई, आकार भी अलग अलग हैं, उनके रंग भी अलग हैं, लेकिन सभी दर्शकों का काम एक ही-समय दिखाना होता है। हमारे कार्य में, कार्यवाह, मुख्य-शिक्षक, शिक्षक, गटनायक, अग्रेसर - इस प्रकार दायित्व संभालने वाले कार्यकर्ता अथवा शारीरिक प्रमुख, बौद्धिक प्रमुख, सेवा प्रमुख, सम्पर्क प्रमुख, माननीय संघचालक आदि संबोधनों से युक्त कार्यकर्ता हैं - लेकिन इन सभी का एक समान कार्य है और वह है संघकार्य का सभी दृष्टि से विकास और विस्तार करना। इस मूलभूत कार्य को ध्यान में रखकर ही सभी कार्यकर्ताओं को अपना-अपना दायित्व निभाना चाहिये।

कार्यकर्ता, कोई शोभा की वस्तु नहीं

हम जिस सभागृह में बैठे हैं, उसमें ऊपर एक छत है। कोई अगर पूछे कि इस छत का क्या उपयोग है ? तो उसका उत्तर निश्चित है - वर्षा या धूप से भीतर बैठे लोगों को सुरक्षित रखना - यही छत का हेतु है। कभी कभी ऊपर घूमनेवाले पंखे भी दिखाई देते हैं - ये पंखे आखिर किसलिये हैं ? इनका क्या उपयोग है ? इन प्रश्नों के उत्तर में स्वाभाविकतया कोई भी कहेगा कि गर्मी के दिनों में हवा मिलनी चाहिये, इसलिये ये पंखे हैं। इसी प्रकार बिजली के बल्बों का हेतु भी निश्चित है कि अंधकार होने पर प्रकाश देना। लेकिन कभी कभी अच्छे सम्पन्न परिवारों के घर की दीवारों पर हिरन का सिर भी लगा दिखाई देता है। आपके शहर (नागपुर) में है या नहीं, मुझे पता नहीं, पर पुराने सम्पन्न परिवारों में दीवार पर हिरन के सिर लगे अक्सर देखे जाते हैं। तो मन में प्रश्न उठता है कि यह हिरन का सिर किसलिये लगाया होगा ? क्या इससे प्रकाश मिलता ? क्या इससे हवा मिलती है ? इन सभी प्रश्नों के उत्तर 'ना' में ही मिलेंगे। किन्तु इसका उत्तर है - यह शोभा बढाने के लिये है। हिरन के सिर से घर की, उस कमरे की शोभा बढती है, ऐसी कल्पना है। क्या,

Scanned by CamScanner

संघकार्य में भी शोभा बढाने के लिये कोई कार्यकर्ता है ? क्या ऐसा अपना विचार है ? इस प्रश्न का उत्तर 'ना' में ही मिलेगा। संघ शाखा की शोभा बढ़नी चाहिये - ऐसा, संघकार्य को सुशोभित करने के लिये हमारे यहां कोई कार्यकर्ता नहीं है।

स्व. नानाराव पालकर, एक संघ समर्पित जीवन था। वे अपने भाषणों में अक्सर एक अंग्रेजी वाक्य सुनाया करते थे - 'देयर इज नो डेकोरेटिव पोस्ट इन आर.एस.एस. ऑल आर लिव्हिंग पोस्टस्' अर्थात संघ में कोई भी शोभा का पद नहीं है, सभी सजीव पद हैं। इस वाक्य का हमें सदा चिन्तन करना चाहिये कि मैं अपना कार्य सुशोभित करने के लिये नहीं करता हूं - मैं एक सजीव कार्यकर्ता हूं - इस कल्पना से, अपने लिये जिस प्रकार का दायित्व मिला है, कार्य की गतिशीलता अथवा कार्य की दिशा-दिग्दर्शन का - किसी भी प्रकार का कार्य हो, इस कार्य के लिये उचित न्याय देनेवाला मैं कार्यकर्ता हूं - यह मन में विचार लेकर मैं अपना स्वयं का विकास करूंगा - कार्यकर्ता से संघ की यही अपेक्षा है।

'एकोऽहम् बहुस्याम. . .'

एक और पद्धति से हम विचार करें। एक बार नागपुर में घूमते हुए बाजार गया तो बाजार में मकई का भुट्टा बेचनेवाला एक विक्रेता दिखाई दिया। मन में इच्छा हुई कि चलो हम भी भुट्टा खायेंगे - सो, उसके सामने जो भुट्टे रखे थे, उनमें से दो-चार निकालकर एक अच्छा सा भुट्टा निकाला। अब यह अच्छा भुट्टा याने क्या ? - तो जिस भुट्टे में अनेक दाने - सौ-सवा सौ दाने थे - ऐसा भुट्टा खरीदकर मैं घर वापस आया। वापस आते समय मन में विचार आया कि इस भुट्टे में सौ-सवा सौ दाने हैं, तो क्या मकई की खेती करनेवाले किसान ने बुआई करते समय सौ-सवा सौ बीज एकत्रित रखे थे ? पर ध्यान में आया कि ऐसा नहीं है। किसान ने एक-एक बीज ही जमीन में डाला था - उसपर अपना पसीना बहाया - खाद, पानी दिया - कुछ दिनों बाद एक अंकुर, एक पौधा निकला और कुछ दिनों बाद उसी पौधे ने सौ-सवा सौ दाने वाला भुट्टा दिया। बीज जानता है कि मैं एक हूं, मुझे अनेक होना है। इसी प्रकार हमें भी विचार करना चाहिये कि मैं संघ का कार्यकर्ता हूं - मैं एक

Scanned by CamScanner

हूं, मुझे अनेक होना है - यह मानसिकता रखकर मैं अनेक लोगों को कार्यकर्ता इस नाते से कैसे प्रेरणा दे सकता हूं - कैसे जोड़ सकता हूं - कैसे विकसित कर सकता हूं - यह विचार हमेशा मन में रखकर मैं अपने कार्यक्षेत्र में कार्य करता रहूंगा। इसीलिये हमारे शास्त्रों में सूत्र बताया गया है - 'एकोऽहम् बहुस्याम' मैं एक हूं, मुझे अनेक होना है।

संघस्थान का उत्पादन

अपने हेडगेवार भवन में अपना संघ वस्तु भांडार है - वहां आपको टोपी मिलेगी, निकर मिलेगी, पट्टा मिलेगा किन्तु वहां ऐसी कोई आलमारी नहीं है, जिसमें कार्यकर्ता भर कर रखे हों और इसलिये अगर कोई मुख्य शिक्षक या कार्यवाह भांडार में जाकर अपनी शाखा के लिये ७-७॥ फुट ऊंचाईवाले हृष्ट-पुष्ट - कुछ कार्यकर्ताओं की मांग करे और उसके लिये जो कीमत हो, चुकाने की तैयारी दर्शाये तो भांडार-प्रमुख कहेगा - हमारा संघवस्तु भांडार कार्यकर्ता देनेवाला भांडार नहीं है। कार्यकर्ता की फसल हमारे संघस्थान पर ही तैयार होती है। हम विचार करें कि मैं एक शाखा चलाता हूं तो मेरी शाखा का उत्पादन क्या होना चाहिये। मेरी शाखा का उत्पादन कार्यकर्ता है, इसे ध्यान में लेकर ही शाखा में आनेवाले स्वयंसेवकों में से किसे मैं कार्यकर्ता का आकार दे सकता हूं - इसका विचार होना चाहिये। हम जानते हैं कि गीली मिट्टी का लोट लेकर एक शिल्पकार हाथ में छोटा सा साधन लेकर उसे इच्छित आकार देने का प्रयास करता है। उस साधन के सहारे मिट्टी के लोट में से अनावश्यक भाग छांटकर वह गणेशजी की मूर्ति तैयार कर सकता है। हमें भी उस शिल्पकार की तरह सोचना और कार्य करना चाहिये। मेरी शाखा में आनेवाले अनेक स्वयंसेवक ऐसे हैं कि जिनके जीवन में, व्यवहार में, दिनचर्या में अनावश्यक हिस्सा है - उस अनावश्यक हिस्से को निकाल दो - तो एक कार्यकर्ता की सजीव मूर्ति मैं निर्माण कर सकता हूं। कार्यवाह, मुख्य शिक्षक को भी एक शिल्पकार की भूमिका निभानी है - मेरे संघस्थान की मिट्टी से मैं कार्यकर्ता की फसल देता हूं - यह स्पष्ट विचार मन में रखकर हमें शाखा-कार्य शुरू रखना चाहिये।

Scanned by CamScanner

कार्यकर्ता का दर्शन कैसा हो ?

स्वाभाविकतया काम करते समय कार्यकर्ता अकेला नहीं, बल्कि अनेक लोगों को साथ लेकर, काम करने के लिये खड़ा करने वाला होने के कारण कार्यकर्ता समूहमय हो जाता है। समूह में कार्य करते समय कार्यकर्ता का दर्शन किन शब्दों से होता है ? इसका जब हम विचार करते हैं तो पहला शब्द ध्यान में आता है - चिन्तन; दूसरा शब्द है - चर्चा; तीसरा शब्द है - निर्णय; चौथा शब्द है - योजना; पांचवा शब्द है - परिश्रम और छठवा शब्द है - सफलता । हमारा कार्यकर्ता एक समूह में काम करनेवाला कार्यकर्ता है। हमारी एक शाखा है। मैं कार्यवाह हूं। मेरी शाखा का एक मुख्य शिक्षक है। मेरी शाखा, सायं. शाखा होने के कारण एक तरुण शिक्षक, एक बाल शिक्षक, दो शिशु शिक्षक है और हरेक प्रकार के तीन-तीन गटनायक हैं - ये सब मिलाकर १३-१४ कार्यकर्ता हैं। हमारी शाखा में तो हम समूह में काम करनेवाले कार्यकर्ता हैं । अपनी शाखा ठीक करने के लिये हरेक कार्यकर्ता को स्वयं चिन्तन करना चाहिये ।

अपने संघस्थान पर कौन से कार्यक्रम होने चाहिये - मेरे मन में विचार आया और शुरू कर दिया - संघ में ऐसा नहीं चलेगा। मैं अपने मन का विचार अपने सभी सहयोगी कार्यकर्ता बंधुओं के सामने रखता हूं। इसके लिये मैंने चर्चा शब्द का प्रयोग किया है। तो, ऐसे चिन्तन और चर्चा के आधार पर हमारा जो कार्यवाह है, वह निर्णय लेगा - यह अपना निर्णय है। निर्णय होने के बाद उसे कार्य रूप में परिणित करने के लिये योजना बनानी चाहिये और उस योजना के अनुसार काम करने के लिये हरेक कार्यकर्ता को परिश्रम करना चाहिये। इसी आधार पर कार्य में सफलता मिलती है।

चिन्तन और व्यवहार

एक कार्यकर्ता - इस दृष्टि से उसका दर्शन है - इसी प्रकार एक कार्यकर्ता समूह - इस दृष्टि से भी उसका दर्शन है। इसी पद्धति से हम अपना काम आगे बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं। अपनी शाखा का काम बढ़ाते समय हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि हमारी शाखा का विकास एक विशिष्ट

Scanned by CamScanner

पद्धति से होना चाहिये । संघ कार्य करनेवाले सभी कार्यकर्ताओं को इसी विशिष्ट पद्धति से चिन्तन और कार्य करना चाहिये । इसके लिये हमारा प्रथम दायित्व है कि शाखा नामक कार्यक्रम की कार्यवाही ठीक से होनी चाहिये - हां, मुख्यतः यह दायित्व कार्यवाह, मुख्य शिक्षक और उसके सहयोगी अन्य कार्यकर्ताओं का है । उनका जो दायित्व है, वह यह कि मेरी शाखा के एक घंटे का कार्यक्रम और २३ घंटों में जो करने के लिये आवश्यक व्यवहार है - इस दृष्टि से मेरी शाखा सुस्थित है ।

सुस्थित शाखा कौन सी ?

व्यवस्थित अथवा सुस्थित शाखा हम किसे कहेंगे ? ठीक शाखा का प्रथम लक्षण है - योजनाबद्ध कार्यक्रम । ६० मिनट का विभाजन किस प्रकार होना चाहिये - इस सम्बन्ध में अपने शारीरिक विभाग ने एक पत्रक तैयार किया है, जिसे आपने भी देखा होगा । उसमें यह सुझाया गया है कि इस ६० मिनटों में कुछ ऐसे कार्यक्रम होने चाहिये, जिनके माध्यम से हम शक्ति की उपासना करते हैं - कुछ कार्यक्रम ऐसे होने चाहिये जिनसे अनुशासन का स्वभाव निर्माण होता है - कुछ कार्यक्रम ऐसे होने चाहिये कि जिस कारण हममें विजिगीषु वृत्ति विकसित होती है - और कुछ कार्यक्रम ऐसे होने चाहिये, जो हमारे हृदय में देशभक्ति की भावना वृद्धिंगत करते हों । इस प्रकार शक्ति, अनुशासन, विजिगीषु वृत्ति और देशभक्ति की भावना को पुष्ट करनेवाली - चार पद्धतियों से परिणामकारक मेरी शाखा होनी चाहिये - यह मेरे कार्यक्रम का स्वरूप है । इसीलिये मेरी शाखा में योग के, सूर्यनमस्कार के, दौड़ के, प्रहार के, प्राथमिक समता के, खेलकूद के, देशभक्ति पर गीतों और अमृतवचनों के साथ ही नित्य प्रार्थना के विविध कार्यक्रम होते हैं । ऐसे चतुर्विध कार्यक्रमों के माध्यम से स्वयंसेवकों में नित्य शक्ति, अनुशासन, विजिगीषु वृत्ति और देशभक्ति के संस्कार होकर समाज का एक उत्तम मनुष्य हम अपनी शाखा में निर्माण करते हैं । प्रतिदिन ६० मिनट की शाखा के ये विविध कार्यक्रम हमारी कार्यवाही का एक प्रमुख पहलू है ।

Scanned by CamScanner

व्यवस्था संबंधी पहलू

हमारी कार्यवाही का दूसरा पहलू है - व्यवस्था। हमारा एक संगठन है और संगठन कहते ही, व्यवस्था का होना अत्यावश्यक है। कपडा व्यवसाय के बारे में मुम्बई, अहमदाबाद शहरों के नाम विख्यात हैं - अपने नागपुर शहर में भी कपड़ा तैयार होता है। हम जानते हैं कि कपड़े के अनेक प्रकार होते हैं - पहले वह केवल कपास के धागे से बनता था - अब कृत्रिम धागा भी आ गया है - ५० प्र.श. कपास का धागा - ५० प्र.श. कृत्रिम धागा उपयोग में लाया जाता है। रेशिम के धागे से कपड़ा तैयार होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कपड़ों में विविधता है लेकिन एक बात निश्चित है कि विश्व में कहीं भी आपको ऐसा कपड़ा देखने को नहीं मिलेगा कि जिसमें केवल खड़ा धागा है। खड़े धागे के साथ ही आड़ा धागा रखने पर ही कपड़े की बुनाई होती है। हम भी एक संगठन का वस्त्र निर्माण करना चाहते हैं तो हमारे संगठन के वस्त्र में खड़ा धागा है अपनी शाखा का सूचिपत्र और आड़ा धागा है सभी के साथ सम्पर्क रखनेवाला गटनायक। इस पद्धति से हमें संगठन का वस्त्र बुनना है। इसके लिये हरेक शाखा का सूची-पत्र होना चाहिये। यह सूची-पत्र किसी एक व्यक्ति के दिमाग में नहीं बल्कि कागज पर, अथवा अपनी डायरी में लिखा होना चाहिये। कागज पर स्वयंसेवकों के नाम लिखे जाय और उनसे सम्पर्क हेतु एक गटव्यवस्था भी होनी चाहिये।

शाखा की गट-व्यवस्था

संगठनात्मक सशक्तता निर्माण करने के लिये वास्तव में ये दो महत्वपूर्ण मुद्दे हैं - पटपत्रक और गटव्यवस्था। अनेक बार इस सन्दर्भ में सभी लोगों का दुर्लक्ष रहता है, यह ध्यान में आता है। अक्सर कोई त्योहार या उत्सव आये तभी उसकी तैयारी के लिये गट-व्यवस्था सक्रिय हो उठती है और उत्सव समाप्त होते ही गटनायक सूची पत्रक अलग निकालकर रख देता है, फिर दैनंदिन शाखा के लिये, उस ओर उसका ध्यान नहीं जाता। संगठन की मजबूती के लिये यह उदासीनता कोई अच्छी बात नहीं। संगठन-कार्य के निरंतर वृद्धि के लिये हमें इसकी आदत डालनी चाहिये। कार्यवाह-मुख्यशिक्षक

Scanned by CamScanner

को चाहिये कि वह अपनी-अपनी शाखा का सूचीपत्रक तैयार करें और दस लोगों के साथ सम्पर्क रखनेवाला गटनायक तैयार करें और ऐसे गटनायकों को प्रतिदिन काम करने की आदत लगा दें । ऐसे गटनायकों की कम से कम माह में एक बैठक अवश्य होनी चाहिये। इस पद्धति से व्यवस्था खड़ी करनी होगी - प्रत्येक मंडल में, प्रत्येक नगर में, प्रत्येक भाग में - हरेक शाखा के लिये इस प्रकार व्यवस्था खड़ी करने का आग्रह प्रवासी कार्यकर्ता का होना चाहिये ।

नवनिर्माण भी जरूरी

हमारी कार्यवाही से जुड़ा हुआ तीसरा शब्द है - शाखा की उपस्थिति । इस पर काफी चर्चा और विचार यहां वर्ग में किया गया है। 'उपस्थिति' के साथ ही मैं इसमें चौथा शब्द जोड़ना चाहूंगा - वह है नवनिर्माण। आखिर में, अगली पीढी का कार्यकर्ता तैयार करने का स्थान भी मेरी शाखा है। प्रतिवर्ष २-४ कार्यकर्ता मेरी शाखा देती है - यह आत्मविश्वास कार्यवाह - मुख्यशिक्षक में होना चाहिये। इस प्रकार हम देखते हैं कि शाखा की कार्यवाही में - कार्यक्रम, व्यवस्था, उपस्थिती और नवनिर्माण - ये पहलू अन्तर्भूत हैं । इन समस्त पहलुओं के साथ निरंतर १ घंटे चलने वाली मेरी दैनिक शाखा है और इस कार्यवाही का शत-प्रतिशत दायित्व कार्यवाह - मुख्यशिक्षक के कंधो पर है।

प्रशिक्षण की व्यवस्था

शाखा का एक और आयाम है, जिसे हम प्रशिक्षण कहते हैं। प्रशिक्षण के दो प्रकार हैं - हमारी बैठक और संघस्थान पर होनेवाला शारीरिक-वर्ग। जहां तक बैठक का प्रश्न है, वह भी प्रशिक्षण का भाग है। बैठक में कैसे बैठना चाहिये - बैठक में कैसी चर्चा करनी चाहिये - चर्चा में कोई बात अगर हमें जंचती नहीं तो अपनी नापसंदगी कैसे और किन शब्दों में व्यक्त करनी चाहिये - आदि बातों से भी मनुष्य बहुत कुछ सीखता है - How to work in group - इसलिये कार्यकर्ता के प्रशिक्षण की हमारी एक पद्धति है - कार्यकर्ताओं की बैठक। यह ठीक है कि शाखा की साप्ताहिक बैठक हो सकती है, भाग की बैठक माह में एक बार और महानगर अथवा प्रान्त की बैठक वर्ष

Scanned by CamScanner

में एक या दो बार हो सकती है - कालावधि कम-अधिक हो सकती है। लेकिन बैठक के सम्बन्ध में हमारी एक ही कल्पना है कि इन बैठकों में हम अपने कार्यकर्ताओं का प्रबोधन करते हैं।

इसी पद्धति से संघ स्थान पर चलने वाले शारीरिक वर्गों का हमें विचार करना है। किस ईकाई पर कब और कहां वर्ग आयोजित करना है, इसका पूर्ण स्वातंत्र्य प्रत्येक प्रान्त को दिया गया है, लेकिन वर्ग यह होना ही चाहिये - यह ध्यान में रखते हुए वर्ग की पुनरावृत्ति ठीक होनी चाहिये। हम सभी ने शरबत यह नाम सुना होगा। अब कोई पूछे कि शरबत में क्या होता है ? तो जवाब मिलेगा - पानी, चीनी, नींबू और नमक का मिश्रण याने शरबत। अब यदि हमने १० लिटर पानी में १ चम्मच शक्कर डाली और दो बूंद नींबू का रस डाला और थोड़ा सा नमक मिलाकर घोला और किसी को शरबत कहकर दिया - तो क्या होगा ? उसे पीने के बाद वह व्यक्ति कहेगा - अरे, यह तो पानी ही है। लेकिन इसका रासायनिक पृथक्करण यदि किया जाए तो उसमें शक्कर, नमक और नींबू का रस होने की बात सिद्ध हो जायेगी। फिर भी वह शरबत नहीं है, क्योंकि पानी के हिसाब से अन्य वस्तुओं का प्रमाण अत्यल्प है। इसी प्रकार यदि कोई कहे कि पांच वर्ष में एक बार हमारा एक शारीरिक वर्ग हुआ - वर्ग होता है, किन्तु पांच वर्ष में एक बार होता है। हर पांच वर्ष की समयावधि के नाते इसे भी नियमीत कहा जा सकता हैं। लेकिन जिसे अंग्रेजी में 'फ्रीक्वेंसी' कहते हैं - वह फ्रीक्वेंसी बहुत कम है। हम यह विचार कर सकते हैं किन्तु बार-बार इसका प्रशिक्षण होना चाहिये - यह मुख्यतः प्रवासी कार्यकर्ता का काम है।

कार्य का विस्तार

प्रवासी कार्यकर्ता का दूसरा प्रमुख काम है - संघ कार्य का विस्तार करना। अपने संघ का कार्य आज जितने स्थानों पर है, उससे अधिक स्थानों पर होना चाहिये। इस दृष्टि से विचार कर कहां नई शाखा हो सकती है ? वहां मैं कौनसे दो कार्यकर्ता भेज सकता हूं ? जो वहां नई शाखा खोलने के लिये आधार बन सकेंगे। अनेक पद्धति से कार्य विस्तार का विचार हम कर सकते

Scanned by CamScanner

हैं - किन्तु यह किसी शाखा कार्यवाह का काम नहीं। यह नगर कार्यवाह का दायित्व है कि वह किस शाखा से, कौन से स्वयंसेवक नई शाखा खड़ी करने के लिये भेजे।

स्वयंसेवकों का स्तर

इसके साथ ही प्रवासी कार्यकर्ता को 'उत्पादन' के विषय में भी अधिक चिन्ता करनी चाहिये। अपनी भिन्न भिन्न शाखा में आनेवाले स्वयंसेवकों का स्तर कैसा हो ? वे किस पद्धति से बोलते हैं ? दिये हुए शब्दों का कितना पालन करते हैं ? परिश्रम से सफलता प्राप्त करने का उनका स्वभाव है क्या ? अनेक पद्धतियों से, हमारे स्वयंसेवकों का गुणोत्कर्ष कैसा हो रहा है, इसका मूल्यांकन आवश्यक है। साथही 'उपयोजना' करना, जिसे अंग्रेजी में एप्लिकेशन (Application) कहा जाता है। की स्वयंसेवक की सभी कसौटियों पर तैयारी आवश्यक है। स्वयंसेवकों में से किस स्वयंसेवक को किस क्षेत्र में भेजा जाए, इसका निर्णय लेना भी प्रवासी कार्यकर्ता का काम है। संघ क्षेत्र के अलावा समाज जीवन के विविध क्षेत्र हैं, जिनमें संघ के संस्कारित स्वयंसेवकों को आवश्यकतानुसार भेजना - यह काम प्रवासी कार्यकर्ता का है।

संघ कार्य का आधार

शाखा कहने के बाद हमारे ध्यान में आयेगा कि संघ का कार्य - शाखा की कार्यवाही, प्रशिक्षण, विस्तार, उत्पादन और उपयोजना - Execution, Education, Expansion, Production and Application - इन पांच शब्दों के आधार पर खड़ा है। इसमें कार्यवाही का प्रमुख दायित्व कार्यवाह व मुख्यशिक्षक पर है तो अन्य चार मुद्दों का दायित्व प्रवासी कार्यकर्ता पर है। हम सभी कार्यकर्ताओं को, कार्यकर्ता शब्द में अन्तर्भूत हमसे अपेक्षित कर्तव्यों का चिन्तन करते हुए उसी के आधार पर अपने कार्य को निरन्तर आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिये।

सायं शाखा और व्यवसायी शाखा (प्रभात अथवा रात्रि) - इन दो प्रकार की शाखाओं का हमें अलग अलग विचार करना होगा। सायं शाखा

Scanned by CamScanner

के सम्बन्ध में हम विचार करें कि हर वर्ष मेरी शाखा - संघ कार्य का विस्तार करने के लिये १५ दिन, २५ दिन विस्तारक के रूप में बाहर निकलने वाले लोग, निर्माण करने वाली शाखा हो। पढ़ाई पूरी करने के बाद साल, दो साल, पांच साल संघ का काम करने के लिये प्रचारक निकल जाऊंगा - ऐसा विचार करने वाला स्वयंसेवक मेरी शाखा से निर्माण हुआ है। अपने जीवन में संघ कार्य को सर्वश्रेष्ठ प्राथमिकता देकर मैं अपने जीवन की रचना करना चाहता हूं - यह विचार प्रमुखता से सायं शाखा में रखा जाना चाहिये - हर शाखा से नया कार्यकर्ता प्रशिक्षित होना चाहिये।

व्यवसायी शाखा से अपेक्षाएं. . .

व्यवसायी शाखा का प्रमुख दायित्व है, सेवा कार्य अथवा समाज प्रबोधन के विविध प्रयोग जो संघ की प्रेरणा से चलाये जा रहे हैं तथा जो समाज में अभिसरण निर्माण करने की दृष्टि से हो रहे हैं - ऐसे कार्यों में सहयोग देना और अपने कार्य की आर्थिक स्थिति मजबूत करना। व्यवसायी शाखाओं के सन्दर्भ में यही विचार आग्रहपूर्वक करना उचित होगा। यहां बैठा हुआ जो कार्यकर्ता व्यावसायिक शाखा से सम्बन्धित है, उन्हे यह देखना चाहिये कि मेरी प्रभात शाखा अथवा रात्रि शाखा अपने किसी सेवा कार्य से जुड़ी है अथवा नहीं ? क्या सामाजिक परिवर्तन के प्रयोगों में मेरी शाखा के स्वयंसेवक भाग लेते हैं या नहीं ? क्या उनके घर में सामाजिक सौहार्द्रता का व्यवहार होता है ? क्या उनके घरों में हिन्दुत्व का दर्शन अथवा संघ में प्राप्त संस्कारों का दर्शन होता है ? वह होना चाहिये - इस दृष्टि से हमारा आग्रह हो। मुझे स्मरण आता है कि हमारे एक प्राध्यापक कार्यकर्ता की लड़की कढ़ाई काम (धागा भरने का काम) सीखकर आयी और उसने अपने पिताजी से कहा कि मुझे ताजमहल का चित्र कपड़े पर खींचकर दो, मैं उसमें धागा भरना चाहती हूं। वे प्राध्यापक हमारे बौद्धिक प्रमुख थे। उन्होने अपनी बेटी से कहा - बेटी ! अपने यहां ताजमहाल का चित्र नहीं मिलेगा - स्मृतिमंदिर का चित्र मिलेगा - इस पर धागा भरो - इसके लिये चाहिये तो बेलूर मठ है, सोमनाथजी का मंदिर है, अयोध्या में प्रस्तावित प्रभु रामचंद्रजी का मंदिर है - ऐसे चित्रों पर

Scanned by CamScanner

धागा भरने का काम करो - ताजमहाल का चित्र अपने घर में नहीं मिलेगा। तो इस प्रकार मेरे जीवन में हिन्दुत्व का दर्शन देखने को मिलता है या नहीं ? छोटे शिशु स्वयंसेवक से हम यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि वह अपने परिवार में हिन्दुत्व का दर्शन कराये, क्यों कि वह कोई निर्णय नहीं ले सकता। हां, प्रभात शाखा का स्वयंसेवक - अपने परिवार का प्रमुख होता है - उनके पारिवारिक जीवन में कभी हिन्दुत्व का दर्शन होता है या नहीं ? उनके पारिवारिक जीवन में सामाजिक जीवन में समरसता का व्यवहार होता है या नहीं ? जिस मोहल्ले में वह रहता है, उस मोहल्ले के समाज के साथ वह काम करनेवाला - सामाजिक अभिसरण करनेवाला है या नहीं ? ये सारे प्रश्न मैं कार्यवाह, मुख्यशिक्षक और प्रवासी कार्यकर्ता के समक्ष विचारार्थ रखना चाहता हूं। उन्हे सोचना चाहिये कि आखिर मेरी सायं शाखा से मुख्यतः क्या अपेक्षा है ? मेरी प्रभात अथवा व्यवसायी शाखा से कौनसी अपेक्षाएं है। यह मन में विचार लेकर सभी लोगों को एक विषय के सम्बन्ध में निश्चित निर्णय लेना चाहिये कि दैनिक शाखा के प्रति उसकी अनन्यसाधारण भक्ति है। बाकी, भाजपा की चुनाव में कैसी विजय होगी ? और किसी स्थान पर - बैंकों, विद्यालयों के चुनावों में कौन चुनकर आयेगा ? इसकी चिन्ता करनेवाले बाकी लोग हैं। मैं कार्यवाह हूं, मैं मुख्यशिक्षक हूं, मेरे पास निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में संघ का दायित्व आया है। मैं मुख्यतः अपनी दैनिक शाखा को ही अनन्य साधारण भक्ति से न्याय देता हूं।

दो देशों के बीच युद्ध हुआ - जिस देश की पराजय हुई उस देश के लोग एकत्रित बैठकर पराभव की कारणमीमांसा करने लगे। विश्लेषण करते समय एक ने कहा कि हमारा सेनापति, जो घोड़े पर सवार था, सबसे आगे था किन्तु उनका घोड़ा चलते चलते अटक गया, इसलिये सेनापति गिर पड़ा और सेनापति के गिरने से हमारा पराभव हुआ। स्वाभाविकतया विश्लेषण करनेवाली समिति के एक सदस्य ने पूछा कि युद्ध के लिये उपयोग में आनेवाले घोड़े को तो विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है, तब यह घोड़ा चलते समय अटक क्यों गया ? तो, एक ने जवाब दिया कि घोड़े के पैरों में नाल लगे होते हैं - नाल उखड़ गया, इसलिये घोड़ा अटक गया। विश्लेषण करनेवाली समिति के

Scanned by CamScanner

सदस्य ने पूछा कि नाल पक्की लगाने के लिये कीलें ठोंकी जाती हैं और इसके लिये विशेष आदमी भी रखा जाता है - तो उत्तर मिला कि एक कील निकल गयी थी - अन्त में विश्लेषण करनेवाली उस समिति ने यह निर्णय दिया कि घोड़े की नाल की एक कील निकल जाने के कारण हमारा देश पराभूत हुआ ।

अधिक परिश्रम आवश्यक

मेरी यह मान्यता है कि देश में हिन्दुत्व का सभी दृष्टि से प्रभाव निर्माण करना है तो हमारी शाखा नामक, जो एक स्थान पर चलने वाला कार्य है, वह मजबूत होना चाहिये। यह विचार मन में लेकर, मेरा काम है कि मेरे घोड़े की नाल की कील निकलने न पाये, ऐसी मजबूती से बिठाऊं। सेना विभाग का एक वाक्य मुझे याद आ रहा है - Give more sweat in peace time then you will loose less blood in war time - हम सभी को इस वाक्य का पूर्वार्ध ध्यान में लेना चाहिये - Give more sweat in peace time - हमारे लिये ऐसा समय मिला है, जिस समय में हम पसीना बहाकर हमारी संघ शाखा अधिक सशक्त, अधिक विस्तारित, अधिक परिवर्तन करने के लिये सक्षम बनाये - ऐसा विचार करने वाला कार्यकर्ता खड़ा रहा, तो नागपुर प्रांत देश का एक प्रभावी प्रांत बनेगा।

* * *

Scanned by CamScanner

कार्यकर्ता से अपेक्षाएं

- हमें ऐसा प्रयत्न करना चाहिये कि हमारे प्रति प्रत्येक के हृदय में एक आदर, आत्मीयता, प्रेम, श्रद्धा और विश्वास का भाव उत्पन्न हो।

- भिन्न-भिन्न प्रकार के भिन्न-भिन्न लोग अपने संबंध में आते रहते हैं, इन सब संबंधों में हमें माधुर्य भर देना चाहिये। इसके लिये हमें अपने व्यवहार को शुद्ध और स्नेह-सम्पन्न बनाना आवश्यक है।

- ध्येय के साथ जितनी एकरूपता होगी, उठते-बैठते, सोते-जागते सभी समय अंतःकरण में, अपने जीवन में, ध्येय का स्पंदन चलता रहेगा तो अपने शब्दों में भी सामर्थ्य आयेगा। जिनसे बात करेंगे वह अपनी बात मानेंगे। जिसको कुछ करने के लिये कहेंगे, वह उसे करने के लिये तैयार होगा।

- प्रत्येक स्वयंसेवक आदर्श बनने का प्रयत्न करे। प्रत्येक इस दृढ निश्चय से परिपूर्ण हो कि मैं अंतःस्फूर्ति से राष्ट्र की सेवा करूंगा। राष्ट्र की सेवा से मेरा पैर कभी पीछे नहीं हटेगा। सब प्रकार से उत्तम शरीर, उत्तम मन, स्थिर निश्चयात्मक और सब प्रकार से समझदार बुद्धि और हृदय में आत्मविश्वास की उमंग, वीरता की विजिगीषा, इन सब गुणों से युक्त होकर एक आदर्श स्वयंसेवक का जीवन अपने स्वतः का बनाने के लिये प्रत्येक को प्रयत्न करना है।

- हमें नित्य यह सोचते हुए कार्य में जुटना है कि इस कार्य को पूरा करना मेरा पुनीत कर्तव्य है और तदनुसार मैं अपनी मनोरचना में बौद्धिक विवेक में तथा शारीरिक क्षमता में ऐसे आवश्यक परिवर्तन लाऊंगा जिससे मैं इस कर्तव्य को उतम प्रकार से निपुणता के साथ पूरा कर सकूं।

Scanned by CamScanner

- सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्ता का श्रीमत् भगवद् गीता में बड़ा सुंदर वर्णन आया है -

मुक्त संगोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सत्विक उच्यते ।
(अध्याय १८, श्लोक २६)

अर्थात् जो निःसंग और निर्लेप है, जिसमें अहंकार नहीं है, जिसके पास धैर्य है, जिसके मन में आकांक्षा और उत्साह है तथा जो कर्म की सिद्धि-असिद्धि से एवं लाभ-हानि से विचलित नहीं होता है, उसी को सात्विक कार्यकर्ता कहते हैं ।

- हमारे कार्यकर्ता को केवल भावनाप्रधान नहीं होना चाहिये क्योंकि भावनातिरेक में कभी-कभी अविवेकपूर्ण, अनाचार, अत्याचार और अनिष्ट कार्य कर बैठने की संभावना होती है । भावनाएं तीव्र अवश्य होनी चाहिये, परंतु उनपर विवेक का अंकुश रहना चाहिये । उसपर ध्येय निष्ठा का प्रभाव रहना चाहिये । उसके द्वारा योग्य मार्ग पर हमारी प्रगति होनी चाहिये । हमें उन्मार्गगामी बनानेवाली भावना किस काम की ?
- कभी-कभी अपने को अनजाने में कार्य के लिये अत्यंत घातक ऐसा वैयक्तिक अहंकार मन में प्रवेश कर जाता है । अहंकार बहुत ही दुष्ट वृत्ति है । अपने को अहंकार आया कि सब दुर्गुणों की सेना उसके साथ घुस जाती है । वह कब आ बैठेगा, कह नहीं सकते । इस सम्बन्ध में कृतकृत्यता या खोटा आत्मविश्वास लेकर चलना अपनी आत्मवंचना करना है । अतएव इन सब विकारों से मुक्त होने व रहने के लिये हम सबको इस राष्ट्रोपासना के रूप में चलनेवाली शाखा को एकाग्र चित्त से चलाने की आवश्यकता है - दिन प्रतिदिन का आग्रह हम लोग इसी दृष्टि से करते हैं ।

Scanned by CamScanner